श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चूलगिरी में (६।६।८८ से प्रारम्भ)

आषाढ सुदी एकादशी

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

ॐ

श्री आचार्यवर्य सकलकीर्ति विरचित

मूलाचार प्रदीप

*

प्रेरक :

उग्रतपस्वी, चारित्रविभूषण, परमपूज्य, आचार्यकल्प

श्री १०८ विवेकसागरजी महाराज

*

सम्पादक :

सिद्धान्तभूषण, न्यायतीर्थ, काव्यतीर्थ

पं० विद्याकुमार सेठी

*

प्रकाशक :

श्री दिगम्बर जैन समाज

मारोठ [राजस्थान]

प्रथमावृत्ति
१२५०

मूल्य :
स्वाध्याय व आत्मचिन्तन

मारोठ (नागौर) राज०
वीर सं० २५११

प्रथम संस्करण
१२५० प्रति
वि० सं० २०४२

परम पू० प्रातः स्मरणीय श्री १०८ आ० ज्ञानसागरजी महाराज के दीक्षित शिष्य तपोनिधि चारित्र चूडामणि श्री १०८ आचार्यकल्प श्री विवेकसागरजी महाराज के मारोठ में चातुर्मास के हर्षोपलक्ष में दि० जैन समाज मारोठ द्वारा प्रदत्त द्रव्य से प्रकाशित।

294.41

मुद्रक—
नेमीचन्द बाकलीवाल
बाकलीवाल प्रिन्टर्स
मदनगंज-किशनगढ़ (राज०)

शिक्षित्वायोखिलं ज्ञानं यदि चारित्रमंजसा । पालयेन्नात्र किं तस्य श्रुतज्ञानफलंभुवि ।।२५१६।।

अर्थ—जो कोई प्रमादी मनुष्य हाथ में दीपक लेकर भी कुए में पड़ जाय तो फिर उसने उस दीपक का फल ही क्या पाया अर्थात् इस लोक में उसे दीपक का फल कुछ नहीं मिला । इसी प्रकार जो मनुष्य समस्त ज्ञान को पढ़कर भी यदि चारित्र को पालन नहीं करता है तो समझना चाहिये कि उसे इस संसार में श्रुतज्ञान का फल कुछ नहीं मिला ।।२५१५-२५१६।।

उद्गमादि दोषों से रहित उपकरणादि ग्रहण करनेवाले के ही शुद्ध चारित्र होता है—

पिण्डं वसतिकां ज्ञानसंयमोपधिमात्मवान् । उद्गमोत्पादनादिभ्योदोषेभ्यःप्रत्यहं सुधीः ।।२५१७।।
शोधयेद्योतिनिर्दोषचारित्रशुद्धयेमुनिः । विशुद्धं तस्य चारित्रंजायते शिवकारणम् ।।२५१८।।

अर्थ—जो आत्मा के स्वरूप को जाननेवाला बुद्धिमान् अपने निर्दोष चारित्र को सिद्ध करने के लिये आहार वसतिका ज्ञानोपकरण और संयमोपकरणों को उद्गम उत्पादन आदि दोषों से प्रतिदिन शुद्ध करता है, आहार भी निर्दोष ग्रहण करता है तथा उपकरणों के ग्रहण में भी कोई दोष नहीं लगाता उसी मुनि के मोक्ष का कारण ऐसा अत्यन्त शुद्ध चारित्र होता है ।।२५१७-२५१८।।

जिनलिंग के चिह्न निर्देश—

पूर्णमचेलकत्वं च लोचोवैराग्यवर्द्धकः । सर्वसंस्कारहीनापराव्युत्सृष्टशरीरता ।।२५१९।।
प्रतिलेखनमित्येषांलिंगकल्पश्चतुर्विधः । जिनेन्द्रलिंगिनां व्यक्तो लोकेसंवेगसूचकः ।।२५२०।।

अर्थ—पूर्णरूप से नग्नता धारण करना, वैराग्य को बढ़ाने वाला केशलोच करना, सब तरह के संस्कारों से रहित शरीर से भी निर्ममता धारण करना और प्रतिलेखन के लिये पीछी धारण करना ये चार लिंगकल्प कहे जाते हैं, ये चारों ही भगवान जिनेन्द्रदेव के लिंग को प्रगट करते हैं और लोक में वैराग्य के चिह्न हैं ।।२५१९-२५२०।।

मयूर पिच्छ के ५ गुणों का निर्देश—

रजःप्रस्वेदयोःसुष्ठ्वग्रहणंमृदुतापरा । सौकुमार्यं लघुत्वं च यत्रपंचगुणाइमे ।।२५२१।।
सन्ति मयूरपिच्छेत्रप्रतिलेखनमूर्जितम् । तं प्रशंसन्तितीर्थेशादयायै योगिनां परम् ।।२५२२।।

अर्थ—जिसपर न तो धूल लग सके, न पसीना लग सके, जो अत्यन्त कोमल हो, सुकुमार हो और छोटी हो, ये पांच गुण जिसमें हों वही प्रतिलेखन उत्तम गिना

जाता है। ये पांचों गुण मयूरपिच्छ में हैं इसलिये भगवान जिनेन्द्रदेव जीवों की दया पालन करने के लिये मुनियोंको मयूरपिच्छ की पीछी की ही प्रशंसा करते हैं ।।२५२१-२५२२।।

निर्ग्रन्थ मुनि कैसे प्रतिलेखन को ग्रहण करें—

प्रक्षिप्तं चक्षुषोर्यच्चमनाक्पीडां करोति न। निर्गर्वंनिर्भयंरम्यं तद्ग्राह्यं प्रतिलेखनम् ।।२५२३।।

अर्थ—जिसको आंख में डाल देने पर भी रंचमात्र पीड़ा न हो वही निर्भय और मनोहर प्रतिलेखन निर्ग्रंथ मुनियों को ग्रहण करना चाहिये। (जिसके रखने में कोई भय न हो मूठ में सोना चांदी न लगा हो उसको निर्भय कहते हैं।) ।।२५२३।।

प्रतिलेखन [पिच्छी] के अभाव में हिंसा से निवृत्ति नहीं हो सकती—

उत्थायशयनाद्रात्रौ विनात्रप्रतिलेखनात्। कृत्वाप्रस्रवणादींश्चपुनः स्वपन्व्रजन्भुवि ।।२५२४।।
उद्वर्तनपरावर्तनानि कुर्वन्नगोचरे। नेत्राणां वा यतिः सुप्तो जीवघातं कथं त्यजेत् ।।२५२५।।

अर्थ—यदि मुनि के पास प्रतिलेखन वा पीछी न हो तो जब कभी रात्रि में वह अपनी शय्या से उठेगा, मूत्र की बाधा दूर करने जायगा, फिर आकर सोवेगा, चलेगा, किसी पुस्तक कमंडलु आदि को उठावेगा, रक्खेगा, उठेगा, कर्वट बदलेगा अथवा ये सब क्रियाएं न भी करे तो भी नेत्र से न दिखने वाले स्थान में सोवेगा, इन सब क्रियाओं में वह यति बिना पीछी के जीवों के घात को कैसे बचा सकेगा। अर्थात् मुनि के पास पीछी हर समय होनी चाहिये, बिना पीछी के जीवों की हिंसा का त्याग हो ही नहीं सकता ।।२५२४-२५२५।।

मुनियों का खास चिह्न पिच्छी है—

मत्वेति कार्तिकेमासि कार्यं सत्प्रतिलेखनम्। स्वयंपतितपिच्छानां लिंगचिह्नं च योगिभिः ।।२६।।

अर्थ—अतएव मुनियों को कार्तिक महीने में स्वयं गिरे हुए पंखों की पीछी बनानी चाहिये क्योंकि यह मुनियों का खास चिह्न है ।।२५२६।।

कायोत्सर्गादि करते समय पिच्छी से प्रमार्जन करना चाहिये—

आसने शयनेस्थाने व्युत्सर्गेगमनादिके। ग्रहणे स्थापने ज्ञानशौचोपकरणात्मनाम् ।।२५२७।।
उद्वर्तनपरावर्त्तनांगकंडूयनादिषु। कृपयायत्नतः कार्यंदृष्टिपूर्वंप्रमार्जनम् ।।२५२८।।

अर्थ—मुनियों को सोते समय, बैठते समय, खड़े होते समय, कायोत्सर्ग करते समय, गमनागमन करते समय, ज्ञानोपकरण वा शौचोपकरण के उठाते रखते समय,